आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 1/मार्च 2022
Received: 12/03/2022; Accepted: 15/03/2022; Published: 24/03/2022

पुस्तक समीक्षा

डॉ. नंदिनी साहू की लंबी कविता 'सीता'

'सीता' लंबी कविता में अनावृत्त नारी का अंतर्मन

करुणालक्ष्मी.के.एस.
सहायक प्राध्यापिका
सरकारी प्रथम दर्जा कॉलेज, हुणसूर
ई मेल- lakshmikarunasharma@gmail.com

करुणालक्ष्मी.के.एस., **डॉ. नंदिनी साहू की लंबी कविता 'सीता'**, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 1/मार्च 2022,(61-64)

डॉ. नंदिनी साहू जी की रचना 'सीता' रामायण को सीता के दृष्टिकोण से देखने का विभिन्न प्रयत्न है। सीता के व्यक्तित्व को एक पतिपारायण,विनम्र,आज्ञाकारी पत्नी के दायरे से ऊपर उठाकर उसे उदात्त भावभूमि पर प्रतिष्ठित करना, उसके व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों को दिखाना लेखिका का अभीष्ठ रहा है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था की धूल के नीचे दबे हुए सीता के उन्नत व्यक्तित्व को लोक के सामने लाने का प्रयास 'सीता' है। 'सीता' हर महिला में सुप्त सीतापन का प्रकटीकरण है, सीता का सार्वत्रीकरण है। समस्त कविता में नारीत्व का अनुसंधान है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के अंग्रेज़ी विभाग की आचार्या डॉ.नंदिनी साहू द्वारा अंग्रेज़ी में रचित इस कविता का श्री दिनेश माली ने हिन्दी में अनुवाद किया है।

विश्वभर की रामायणों का हवाला देते हुए लेखिका ने यह खेद प्रकट किया है कि किसी भी रामायण में सीता के व्यक्तित्व प्रति न्याय नहीं किया गया। हमेशा सीता के दमित रूप को ही दिखाकर उसकी शक्ति और गरिमा को अपमानित किया गया है। इस रचना में सीता के मुँह से "मैं हूँ मृत्युहीन देवी, अधिवास मेरा प्रत्येक जीवित-नारी" कहलाकर लेखिका ने सीता के चरित्र को वैश्विक धरातल पर प्रतिष्ठित किया है। भारत की महिला प्रधान मंत्री,राष्ट्रपति, गृहिणी मदर थेरेसा,निर्भया,मलाला और एम्स के ट्रॉमा सेंटर में कराहनेवाली बहू

भी सीता है। काव्य में सीता द्वारा पूछे गए प्रश्न सार्वकालिक तथा सार्वदेशीय हैं। अनादि काल से कई अनुत्तरित प्रश्नों को 'सीता' ने फिर से छेड़ा है।

लेखिका ने सीता को अत्यंत आधुनिक दृष्टिकोण से देखा है और कविता में सीता का व्यक्तित्व कालातीत,सीमातीत होकर उभरकर आया है। सीता का मन स्त्री-सहज कोमल भावनाओं का आश्रयस्थान होने के बावजूद वे सारे गुण उसकी कमज़ोरी बनकर उसकी मनोदशा पर अंकुश नहीं लगाते। पति से निर्व्याज प्रेम करनेवाली, अपने बच्चों की ममतामयी सीता समय आने पर, व्यक्तित्व पर कलंक लगने पर विद्रोह कर बैठती है। अपने पति राजा राम से प्रश्न करने का साहस दिखाती है। सीता के मुँह से फूटनेवाले प्रश्न पाठकों को झकझोरनेवाले हैं। लोकपूज्य भगवान राम की पत्नी होने का सौभाग्य पानेवाली सीता के मन की पीड़ा का सार इन दो पंक्तियों में अभिव्यक्त है-

तुम्हारी पूर्णता की इच्छा ने मुझे जब्त कर दिया।
तुम्हारे ईश्वरत्व ने साधारण महिला से भी मुझे बदतर बना दिया।

'सीता' में केवल राम की पत्नी सीता के अंतर्मन के प्रश्नों को वाणी न देकर लेखिका ने पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री पर लगाए समस्त आरोपों को निरस्त किया है। "मात्सर्य स्त्री का दूसरा नाम है" उक्ति को लेखिका ने नकारा है। सीता का मन अपनी बहन ऊर्मिला, मांडवी और श्रुतकीर्ति के प्रति भी द्रवित होता है, राम को वनवास प्राप्त होने के बावजूद उसका संकष्ट परिवार के सब को भोगना पड़ा। 'सीता' की सीता राम से यह पूछने का धृष्टता दिखाती है-

ऊर्मिला की वेदना देख, क्यों नहीं धड़का तुम्हारा हृदय?
तुम्हारे राम-राज्य का अंतहीन प्रेम-प्राचुर्य
नहीं मिटा सका उसके हृदय का पीर।

केवल अपनी बहनों के बारे में ही नहीं, सीता रावण की पत्नी मंदोदरी,इंद्रजीत की पत्नी सुलोचना, राक्षसी त्रिजटा आदि स्त्रियों के बारे में सद्भाव रखती है। पुरुषसत्तात्मक समाज में अस्तित्व खोकर कराहनेवाली स्त्रियों के बारे में सहानुभूति रखती है।

सीता पुरुषसत्तात्मक व्यवस्था पर निड़र होकर प्रश्नों के बाणों से प्रहार करती है परंतु वह सारे पुरुष कुल द्वेष नहीं करती है। पति श्रीराम पर उसकी भक्ति अपार है, वह अपने पति को दैवांश संभूत के रूप में तथा साधारण मानव दोनों रूप में देखती है। वह अवतार के रूप में श्री राम को देखकर उसकी रीत पर विस्मित होती है, मानव रूप में देखकर उसके व्यवहारों पर प्रश्नचिन्ह भी लगाती है।

अवैयक्तिक और वैयक्तिक और इसके विपरीत,

साकार होते हुए भी निराकार,

सभी की समझ से परे है तुम्हारी रीत

समझ से परे कहनेवाली सीता एक ओर राम से प्रश्न कर बैठती है कि अत्यंत मार्मिक है-

क्या किसी औरत का उद्धार हो सकता है छूने से किसी के चरण?

क्या किसी दुष्ट आदमी के छूने से मिट जाता है उसका सम्मान?

सीता के अग्निप्रवेश करने के द्वारा सतिसहगमन, जौहर आदि अनिष्ठ प्रथाओं का समाज में आरंभ हुआ कहते हुए इस कुप्रथा के लिए सीता को दोषी के स्थान पर खड़े करनेवालों के लिए भी 'सीता' में उत्तर है। दो बार अग्निप्रवेश करने के प्रसंग सीता के जीवन में आए। पहली बार सीता ने अग्निप्रवेश करके अपनी पवित्रता सिद्ध की। उस समय उसके जीवन में अनेक ज़िम्मेदारियाँ बाकी थी, मातृत्व के बिना उसका जीवन संपूर्ण होना कैसे संभव था? और पर स्थल में पिता और पति के संरक्षण के बिना भी स्त्री अपने शील की रक्षा करके अकलंकित रह सकती है, इसे जग को दिखाना था, इसलिए उसने अग्निप्रवेश किया। पर दूसरी बार वह विद्रोह कर देती है। इस बार वह अपनी सारी ज़िम्मेदारियों से मुक्त है-

पहली अग्नि परीक्षा को मैंने मन से किया स्वीकार
मगर दूसरे से किया इंकार
आग में शुद्धता साबित करें क्यों बार-बार?

सीता को एकल माता होने का गर्व है। यह आज के समकालीन समाज की नवीन प्रवृत्ति है तथा चुनौती भी। सीता इस चुनौती को भी समर्थ रूप से निभाकर संसार के सामने बहुत बड़ा निदर्शन बनी हुई है। वाल्मीकि आश्रम में रहकर उसने अपने बेटों को अच्छे संस्कार देकर समर्थ रीति से पालन पोषण किया।

सीता की कहानी केवल एक युग की नहीं है, हर युग की हर स्त्री के भावकोशों में सीता सुप्त रूप में विद्यमान है। सीता एक परंपरा है, सीता एक शक्ति है, सीता स्त्रीत्व की वाणी है।

जन्म लूँगी बार-बार

हर जन्म में रहूँगी मुक्त, समकालीन प्रबुद्ध शक्ति
क्योंकि मैं हूँ स्वतंत्रता की अभिव्यक्ति

डॉ.दिनेश कुमार माली जी ने इस कृति को अत्यंत समर्थ रीति से हिन्दी में अनूदित किया है। अपने विषय तथा प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से यह कृति हिन्दी भाषा में अत्यंत सहज होकर पाठकों के सामने आयी है। भाषा सहज, अलंकारयुक्त तथा लचीली है। कृति में कहीं पर भी कृत्रिमता का आभास नहीं होता। मूल रचना के भाव को अत्यंत उचित रीति से ग्रहणकर के उसके अनुकूल भाषा-प्रयोग करने में माली जी सिद्धहस्त हैं। अनुवाद कला की सूक्ष्मताओं का अच्छा ज्ञान रखनेवाले डॉ.दिनेश माली की अनूदिन कृति 'सीता' एक मौलिक कृति को पढ़ने का आनंद प्रदान करती है। हिन्दी पाठकों को ऐसी एक विशिष्ट रचना समर्पित करने के माध्यम से उन्होंने साहित्य समृद्धि में योगदान दिया है।

****